Ram Bux Singh

Ram Bux Singh (1925–2016) was a pioneering Indian scientist, author, and expert in renewable energy whose work contributed significantly to the development of biogas technology and sustainable energy solutions. His contributions helped advance the understanding and application of biogas systems in India and abroad.

His work in biogas technology began early in India. In 1957, he inaugurated one of India's earliest successful gobar gas (biogas) plant in Sitapur, Uttar Pradesh-one of its kind, demonstrating its uniqueness, marking an important milestone in the development of rural renewable energy solutions in the country. A particularly remarkable milestone came in June 1972, when he was associated with establishing one of the earliest gobar gas (biogas) plant in the United States. His work subsequently extended beyond India, and he contributed to renewable energy and biogas initiatives in more than 15 countries, including the United States, Denmark, the United Kingdom, Germany, Mexico, Costa Rica, and Canada. His contributions to methane generation and rural energy solutions received recognition in professional and academic circles, including reference in the 1975 United States Senate Report, and were featured in publications such as Mother Earth News.

He also served for 16 years as Officer-in-Charge of Asia's first Gobar Gas Research Station at Ajitmal, district Auraiya, Uttar Pradesh, under the Planning, Research and Action Division (PRAD), Lucknow of the State Planning Institute, Government of Uttar Pradesh. He also served as a consultant in the field of biogas and renewable energy, including assignments associated with the United Nations.

An accomplished author, he wrote several books on biogas technology, including Biogas Plant: Generating Methane from Organic Wastes, which is regarded as an important contribution to the field and is catalogued by the Library of Congress, United States.

His legacy has received continued institutional recognition. On 26 September 2023, the National Archives of India, under the Ministry of Culture, Government of India, acquired a collection of his research papers and professional records, which have been digitized and made accessible through the Abhilekh Patal portal. His contributions to renewable energy and biogas technology have also been formally included in NCERT textbooks, reflecting national academic recognition of his pioneering work.

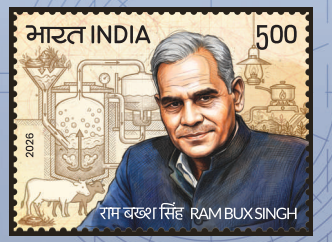
Recognizing his contributions to renewable energy and sustainable development, the Department of Posts, Government of India, is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp in honour of Ram Bux Singh. This philatelic tribute celebrates his pioneering work in biogas technology and acknowledges his lasting legacy in promoting sustainable energy solutions for rural communities in India and beyond.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Kamleshwar Singh
Text	:	Based on the content provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



राम बख्श सिंह
RAM BUX SINGH

विवरणिका BROCHURE

राम बख्श सिंह

बायोगैस प्रौद्योगिकी और सतत ऊर्जा विकल्पों के विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले अग्रणी भारतीय वैज्ञानिक, लेखक और नवीकरणीय ऊर्जा विशेषज्ञ राम बख्श सिंह (1925–2016) ने भारत तथा विदेशों में बायोगैस प्रणालियों के अनुप्रयोग और उनके बारे में समझ विकसित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

राम बख्श सिंह ने भारत में बायोगैस प्रौद्योगिकी पर अपना कार्य बहुत पहले शुरू कर दिया था। वर्ष 1957 में, उन्होंने उत्तर प्रदेश के सीतापुर में भारत का एक सबसे पहला सफल गोबर गैस (बायोगैस) संयंत्र शुरू किया। यह अपनी तरह का पहला और विशिष्ट संयंत्र था, जिसे ग्रामीण नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों के विकास के क्षेत्र में देश में एक उल्लेखनीय उपलब्धि माना जाता है। जून, 1972 में एक महत्वपूर्ण क्षण तब आया, जब राम बख्श सिंह संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरुआती गोबर गैस (बायोगैस) संयंत्र में से एक की स्थापना के कार्य से जुड़े। इसके बाद, उन्हें भारत के बाहर तमाम देशों में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ, और उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ–साथ डेनमार्क, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, मैक्सिको, कोस्टा रिका और कनाडा सहित 15 से भी अधिक देशों में नवीकरणीय ऊर्जा और बायोगैस संबंधी पहलों में योगदान दिया। मीथेन उत्पादन और ग्रामीण इलाकों में वैकल्पिक ऊर्जा समाधानों के क्षेत्र में उनके योगदान को न केवल व्यावसायिक बल्कि अकादमिक हलकों में भी खूब सराहा गया। इसके अलावा, वर्ष 1975 की संयुक्त राज्य अमेरिका की एक सीनेट रिपोर्ट, तथा 'मदर अर्थ न्यूज' जैसे प्रकाशनों में भी उनके योगदान को स्थान मिला।

राम बख्श सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार के 'राज्य योजना संस्थान, लखनऊ' के 'योजना, अनुसंधान और कार्य प्रभाग (पीआरएडी)' के तहत जिला औरैया के अजीतमल कस्बे में एशिया के पहले गोबर गैस अनुसंधान स्टेशन के प्रभारी–अधिकारी के रूप में 16 वर्ष तक कार्य किया। इसके अलावा, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सहित कई अन्य संगठनों के लिए बायोगैस और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सलाहकार के रूप में भी कार्य किया।

राम बख्श सिंह एक कुशल लेखक भी थे। उन्होंने बायोगैस प्रौद्योगिकी पर कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'बायोगैस संयंत्र : जैविक अपशिष्ट से मीथेन उत्पादन' भी शामिल है। इस पुस्तक को बायोगैस प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पुस्तक माना जाता है और इसे लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अपनी सूची में शामिल किया गया है।

उल्लेखनीय है कि उनकी विरासत को निरंतर संस्थागत मान्यता मिलती रही है। 26 सितंबर 2023 को, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले 'राष्ट्रीय अभिलेखागार' ने राम बख्श सिंह के शोध पत्रों एवं पेशेवर रिकॉर्ड्स के संग्रह को अधिग्रहीत कर उसे अपने 'अभिलेख पटल पोर्टल' के माध्यम से डिजिटाइज किया और उसे आमजन के लिए सुलभ बनाया। नवीकरणीय ऊर्जा तथा बायोगैस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके योगदान को एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों में भी शामिल किया गया है, जो इस क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व कार्य की राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षणिक मान्यता का प्रतीक है।

डाक विभाग, नवीकरणीय ऊर्जा और सतत विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान देने वाले राम बख्श सिंह के सम्मान में एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट, बायोगैस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यों तथा भारत और भारत के बाहर ग्रामीण समुदायों के लिए सतत ऊर्जा समाधानों को बढ़ावा देने की उनकी अक्षुण विरासत के सम्मान का प्रतीक है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री कमलेश्वर सिंह

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रित डाक टिकटें	: 303425
Stamps Printed	: 303425
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00